कृत्रिम बुद्धिमता और ज्योतिष

क्या मशीनें भाग्य पढ़ सकती हैं?

ज्योतिषाचार्य
डॉ. तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के इतिहास में कुछ ऐसे क्षण आते हैं जब नई तकनीक केवल जीवन की सुविधा नहीं बदलती, बल्कि मनुष्य के सोचने का ढंग भी बदल देती है. मुद्रण कला के आविष्कार ने ज्ञान को सीमित वर्ग से निकालकर समाज तक पहुँचाया. दूरभाष ने दूरियों को कम किया. संगणक ने गणना की गति को नई दिशा दी. अब कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव बुद्धि के समक्ष एक नया प्रश्न खड़ा कर दिया है—क्या ऐसा समय आ सकता है जब मशीनें मनुष्य से अधिक जानने लगें? और यदि ऐसा हुआ, तो क्या वे ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान-विषय का स्थान भी ले लेंगी?

इन्हीं प्रश्नों पर विचार करने के लिए एक रात्रि परामर्श एवं शोध केंद्र के पुस्तकालय में एक अनौपचारिक चर्चा प्रारम्भ हुई. बाहर वर्षा की हल्की फुहार अभी-अभी थमी थी. आकाश में बादलों के बीच से कुछ तारे झाँकने लगे थे. भीतर दीपक की शांत लौ के साथ प्राचीन ग्रंथों और आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें एक ही कक्ष में सुसज्जित थीं. ऐसा लगता था मानो अतीत और भविष्य एक-दूसरे के सामने बैठे हों.

आचार्य तेजस एक जन्मपत्री का परीक्षण कर रहे थे. उनके सामने कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित एक नवीन विश्लेषण प्रणाली खुली हुई थी. कुछ ही क्षणों में उसने ग्रहों की स्थिति, दशा, योग, गोचर तथा संभावित जीवन-प्रवृत्तियों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर दिया. गणना की गति अद्भुत थी. जहाँ सामान्यत: एक विद्यार्थी को कई घंटे लग सकते थे, वहाँ यह कार्य कुछ ही क्षणों में पूर्ण हो गया.

उसी समय डॉ. अंजलि पुस्तकालय में पहुँचीं. वे वर्षों से समाजकार्य के क्षेत्र में सक्रिय थीं और प्रतिदिन ऐसे लोगों से मिलती थीं जिनके जीवन में आर्थिक, पारिवारिक, मानसिक अथवा सामाजिक संकट थे. उन्होंने मुस्कुराकर पूछा, 'लगता है आज आपका नया सहायक बहुत तेज़ी से काम कर रहा है.' आचार्य तेजस ने स्क्रीन की ओर देखा और शांत स्वर में कहा, 'यह सहायक है, आचार्य नहीं.'

डॉ. अंजलि ने सहज जिज्ञासा से पूछा, 'यदि यह गणना मनुष्य से अधिक तीव्रता और अधिक शुद्धता से कर सकता है, तो भविष्य में लोग इसी से परामर्श क्यों नहीं लेंगे?' आचार्य तेजस ने कुछ क्षण विचार किया. फिर बोले, 'क्योंकि गणना और परामर्श एक ही बात नहीं हैं. गणना बुद्धि का कार्य है, परामर्श संवेदना का.' इतने में आरव भी वहाँ आ पहुँचा. वह विज्ञान का शोधार्थी था और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर कार्य कर रहा था. उसने उत्साह से कहा, 'यदि लाखों जन्मपत्रियों का विश्लेषण किसी प्रणाली को उपलब्ध करा दिया जाए, यदि उसे समस्त प्राचीन ग्रंथों का अध्ययन करा दिया जाए और यदि वह प्रत्येक नए उदाहरण से स्वयं सीखती रहे, तो क्या वह मनुष्य से अधिक सक्षम नहीं हो जाएगी?' यह प्रश्न केवल तकनीकी नहीं था. यह प्रश्न ज्ञान की प्रकृति से जुड़ा हुआ था. इसी समय डॉ. पथिक पुस्तकालय में आए. उनके हाथ में न कोई आधुनिक उपकरण था, न कोई चमकदार यंत्र. केवल बृहत्पाराशर होरा शास्त्र की एक पुरानी प्रति थी, जिसके पृष्ठ समय के साथ पीले पड़ चुके थे. उन्होंने सबकी ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा, 'लगता है आज प्रश्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नहीं, ज्ञान का है. उन्होंने आरव से पूछा, 'यदि कोई प्रणाली समस्त शास्त्र कंठस्थ कर ले, तो क्या वह ऋषि बन जाएगी?' आरव ने तुरंत उत्तर नहीं दिया. डॉ. पथिक ने आगे कहा, 'यदि कोई व्यक्ति औषधियों के सभी नाम याद कर ले, तो क्या वह करुणामय चिकित्सक भी बन जाता है? यदि कोई संगीत के सभी स्वर लिख दे, तो क्या वह महान गायक कहलाता है? यदि कोई न्यायालय के सभी नियम जान ले, तो क्या वह न्यायप्रिय भी हो जाता है?' पुस्तकालय में मौन छा गया. डॉ. अंजलि ने उस मौन को तोड़ा. उन्होंने कहा, 'समाजकार्य में मैंने एक बात सीखी है. संकट में पड़ा हुआ व्यक्ति केवल उत्तर नहीं चाहता. वह चाहता है कि कोई उसकी बात सुने. कोई उसके भय को समझे. कोई उसके भीतर आशा जगाए. यदि किसी माँ का पुत्र गंभीर बीमारी से जूझ रहा हो और कोई मशीन उसे केवल संभावनाओं की सूची दे दे, तो क्या उसका भय कम हो जाएगा?' आचार्य तेजस ने धीरे से कहा, 'यही वह स्थान है जहाँ मनुष्य और मशीन अलग हो जाते हैं. मशीन सूचना देती है, मनुष्य अर्थ देता है. मशीन गणना करती है, मनुष्य विवेक से निर्णय करता है. मशीन संभावनाएँ बताती है, मनुष्य आशा जगाता है.'

डॉ. पथिक ने मेज़ पर रखे दीपक की ओर संकेत करते हुए कहा, 'इस दीपक का प्रकाश सबको समान रूप से मिलता है. पर किसी साधक के लिए यह ध्यान का प्रतीक है, किसी विद्यार्थी के लिए अध्ययन का, किसी शोकाकुल व्यक्ति के लिए आशा का. वस्तु वही रहती है, अर्थ मनुष्य की चेतना देती है. कृत्रिम बुद्धिमत्ता प्रकाश दे सकती है, पर उस प्रकाश का अर्थ मनुष्य ही समझता है.'

लेख यहीं समाप्त नहीं होता. प्रश्न अभी शेष है—क्या भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ज्योतिष का स्थान ले लेगी, या वह केवल उसके अध्ययन का एक नया साधन बनेगी? शायद इसका उत्तर तकनीक में नहीं, मनुष्य की चेतना में छिपा है. ज्ञान की गति जितनी बढ़े, उतना ही आवश्यक है कि करुणा, नैतिकता और विवेक भी उसके साथ चलें. अन्यथा सूचना बढ़ेगी, पर बुद्धि नहीं; गणना बढ़ेगी, पर मार्गदर्शन नहीं. यही कारण है कि ज्योतिष का भविष्य केवल ग्रहों की गणना में नहीं, बल्कि उस मानवीय संवाद में सुरक्षित है जिसमें ज्ञान के साथ संवेदना, तर्क के साथ करुणा और परम्परा के साथ उत्तरदायित्व भी उपस्थित हो.आरव अभी भी संतुष्ट नहीं था. वह विज्ञान का विद्यार्थी था और उसके लिए प्रत्येक निष्कर्ष का आधार तर्क और परीक्षण था. उसने कुछ क्षण सोचने के बाद कहा, 'यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता लाखों जन्मपत्रियों का अध्ययन कर सकती है, ग्रहों की प्रत्येक स्थिति का विश्लेषण कर सकती है, शास्त्रों के हजारों सूत्रों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकती है और प्रत्येक नए अनुभव से स्वयं सीख सकती है, तब क्या यह नहीं कहा जा सकता कि भविष्य में वह किसी भी ज्योतिषी से अधिक सक्षम हो जाएगी?

आचार्य तेजस ने अपनी शोध-डायरी खोली. वर्षों के अध्ययन के दौरान लिखे गए कुछ वाक्य उनकी दृष्टि के सामने आ गए. उन्होंने कहा, 'मेरे अध्ययन में एक बात बार-बार सामने आई कि अधिकांश लोग ज्योतिष के पास भविष्य जानने के लिए नहीं आते. वे अनिश्चितता के समय मानसिक सहारा, निर्णय की स्पष्टता और आशा की तलाश में आते हैं. यदि यह सत्य है, तो केवल गणना पर्याप्त नहीं हो सकती.' डॉ. अंजलि ने सहमति में सिर हिलाया. 'समाजकार्य में भी यही अनुभव होता है,' उन्होंने कहा. 'जब कोई व्यक्ति संकट में होता है, तब वह आँकड़ों से अधिक विश्वास खोजता है. उसे यह अनुभव होना चाहिए कि कोई उसकी परिस्थिति को समझ रहा है. किसी भी परामर्श का पहला आधार संवेदना है, दूसरा विश्वास और तीसरा ज्ञान. यदि पहला ही अनुपस्थित हो जाए, तो शेष दोनों का प्रभाव बहुत कम रह जाता है.'

वट सावित्री पूजा से मिलती अखंड सौभाग्य की शक्ति

वट पूर्णिमा का पर्व सुहागिन महिलाओं के लिए बेहद खास माना जाता है. इस दिन महिलाएं पति की लंबी उम्र, सुख-समृद्धि और अखंड सौभाग्य की कामना के लिए व्रत रखकर वट वृक्ष की पूजा करती हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, इस दिन साड़ी का रंग भी विशेष महत्व रखता है. .

हिंदू धर्म में वट पूर्णिमा का पर्व विवाहित महिलाओं के प्रमुख त्योहारों में से एक माना जाता है. ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन मनाया जाने वाला यह पर्व माता सावित्री और सत्यवान की कथा से जुड़ा है. मान्यता है कि माता सावित्री ने अपने अटूट प्रेम, तप और दृढ़ संकल्प से यमराज से अपने पति सत्यवान के प्राण वापस प्राप्त किए थे. तभी से महिलाएं पति की लंबी आयु और सुखी वैवाहिक जीवन की कामना के लिए वट वृक्ष की पूजा और व्रत करती हैं.

धार्मिक मान्यता है कि शुभ रंग धारण कर श्रद्धा और विधि-विधान से की गई पूजा से मन को सकारात्मकता मिलती है और दांपत्य जीवन में प्रेम, विश्वास तथा सौहार्द बना रहता है. हालांकि, राशि और रंगों से जुड़े ये सुझाव धार्मिक और ज्योतिषीय मान्यताओं पर आधारित हैं. इनकी वैज्ञानिक पुष्टि उपलब्ध नहीं है. ऐसे में श्रद्धा और अपनी पारिवारिक परंपराओं के अनुसार ही पूजा-अर्चना करना उचित माना जाता है.

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, वट पूर्णिमा के दिन पूजा के समय वस्त्रों का रंग भी महत्वपूर्ण माना जाता है. इस दिन काले रंग की साड़ी पहनने से बचने की सलाह दी जाती है. इसके अलावा गहरे राखी (ग्रे), धुंधले और अत्यधिक मटमैले रंगों को भी इस दिन पहनने से बचने की मान्यता है.

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, यदि महिलाएं अपनी राशि के अनुरूप रंगों का चयन करें तो इसे शुभ माना जाता है. मेष राशि की महिलाओं के लिए लाल या केसरिया, वृषभ के लिए गुलाबी या सफेद, मिथुन के लिए हरा या हल्का पीला, कर्क के लिए सफेद या सिल्वर, सिंह के लिए केसरिया या सुनहरा तथा कन्या राशि के लिए हल्का हरा या क्रीम रंग शुभ माना गया है.

इसी प्रकार तुला राशि की महिलाओं के लिए नीला या गुलाबी, वृश्चिक के लिए गहरा लाल या मैजेंटा, धनु के लिए पीला या केसरिया, मकर के लिए हल्का नीला-हरा, कुंभ के लिए नीला या बैंगनी तथा मीन राशि के लिए सफेद, गुलाबी या क्रीम रंग शुभ माने जाते हैं.

संकष्टी चतुर्थी जानें पूजा मुहूर्त और चंद्रोदय समय

आषाढ़ माह के कृष्ण पक्ष की कृष्णपिङ्गल संकष्टी चतुर्थी का व्रत भगवान गणेश को समर्पित होता है. इस दिन भक्त गणेश जी के कृष्णपिंगल स्वरूप की पूजा करते हैं और व्रत रखकर सुख-समृद्धि और सफलता की कामना करते हैं. साल 2026 में यह तिथि 3 जुलाई को शुरू होकर 4 जुलाई को समाप्त होगी, जिससे तिथि को लेकर लोगों में असमंजस बना हुआ है कि व्रत किस दिन रखा जाएगा.

हिंदू धर्म में संकष्टी चतुर्थी का विशेष महत्व माना गया है. हर महीने कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर भगवान गणेश की पूजा की जाती है. आषाढ़ माह की इस चतुर्थी को कृष्णपिङ्गल संकष्टी चतुर्थी कहा जाता है. मान्यता है कि इस दिन व्रत रखने और गणपति बप्पा की पूजा करने से सभी प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं और जीवन में सफलता प्राप्त होती है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, संकष्टी चतुर्थी का व्रत उस दिन रखा जाता है जिस दिन रात्रि में चंद्र दर्शन और पूजा संभव हो सके. इस दिन व्रतधारी दिनभर उपवास रखते हैं और शाम को भगवान गणेश की पूजा करते हैं. इसके बाद चंद्रोदय होने पर चंद्रमा को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया जाता है.

संकष्टी चतुर्थी को भगवान गणेश का अत्यंत प्रिय व्रत माना जाता है. इसे करने से जीवन के सभी कष्टों का नाश होता है और भक्तों को सुख, समृद्धि तथा मनोवांछित फल प्राप्त होता है. विशेष रूप से कृष्णपिङ्गल संकष्टी चतुर्थी को अत्यंत शुभ माना गया है, क्योंकि यह तिथि आषाढ़ मास में आती है, जो आध्यात्मिक साधना के लिए महत्वपूर्ण समय माना जाता है.

घर में कौन सा पेड़ लगाना होता है शुभ

भारतीय परंपरा और वास्तु शास्त्र में कुछ पेड़-पौधों को शुभ माना जाता है. मान्यता है कि सही स्थान पर लगाए गए पौधे घर में सकारात्मक वातावरण और हरियाली बढ़ाते हैं. हालांकि, इन मान्यताओं के लाभों की वैज्ञानिक पुष्टि सीमित है. भारतीय संस्कृति में पेड़-पौधों का विशेष महत्व है. इन्हें केवल पर्यावरण का हिस्सा नहीं, बल्कि धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है. कई लोग घर में ऐसे पौधे लगाना पसंद करते हैं जिन्हें शुभता, समृद्धि और सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है.

तुलसी का पौधा सबसे शुभ माना जाता है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, तुलसी का पौधा घर

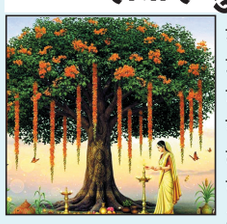

में लगाने और उसकी नियमित पूजा करने से सकारात्मक वातावरण बना रहता है. इसे आमतौर पर घर के आंगन, बालकनी या उत्तर-पूर्व दिशा में लगाया जाता है. आंवला का पेड़ भी धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाता है. मान्यता है कि यह भगवान विष्णु को प्रिय है और इसकी पूजा का विशेष महत्व बताया गया है. यदि पर्याप्त जगह हो तो इसे घर के परिसर में लगाया जा सकता है.

केले का पौधा भी शुभ माना जाता है. कई धार्मिक अनुष्ठानों और गुरुवार की पूजा में केले के पौधे की पूजा की जाती है. इसे घर के खुले स्थान में लगाया जा सकता है, जहां पर्याप्त धूप और पानी मिले. अशोक का पेड़ शांति और सौंदर्य का प्रतीक माना जाता है. इसे घर के मुख्य द्वार या बगीचे में लगाने की परंपरा कई स्थानों पर देखने को मिलती है.

घर में जानिए किस दिशा में रखें इलेक्ट्रॉनिक सामान

वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है. यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है, इसलिए टीवी, माइक्रोवेव, ओवन, कंप्यूटर और अन्य विद्युत उपकरण यहां रखने से सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है.

घर में रखे इलेक्ट्रॉनिक उपकरण केवल सुविधा ही नहीं देते, बल्कि वास्तु शास्त्र के अनुसार उनकी सही दिशा घर के वातावरण और ऊर्जा पर भी प्रभाव डालती है. यदि फ्रिज, टीवी, वॉशिंग मशीन या अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान उचित स्थान पर रखा जाए, तो सकारात्मक ऊर्जा का संचार बढ़ता है और घर का माहौल संतुलित रहता है.

आज के समय में लगभग हर घर में फ्रिज, टीवी, माइक्रोवेव, वॉशिंग मशीन, कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण मौजूद हैं. इनका सही उपयोग जितना आवश्यक है, उतना ही महत्वपूर्ण है इन्हें सही दिशा में रखना. वास्तु शास्त्र में इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं को अग्नि तत्व से जुड़ा माना गया है, इसलिए इनके स्थान का विशेष महत्व बताया गया है. वास्तु विशेषज्ञों के अनुसार, दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) दिशा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के लिए सबसे उपयुक्त मानी जाती है. यह दिशा अग्नि तत्व का प्रतिनिधित्व करती है,

फ्रिज कहां रखें?- फ्रिज को दक्षिण-पूर्व, पश्चिम या दक्षिण दिशा में रखा जा सकता है. इसे उत्तर-पूर्व (ईशान) दिशा में रखने से बचना चाहिए. साथ ही फ्रिज को दीवार से थोड़ा हटाकर रखें ताकि हवा का उचित प्रवाह बना रहे और मशीन पर अनावश्यक दबाव न पड़े.

इन बातों का रखें ध्यान- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को उत्तर-पूर्व दिशा में रखने से बचें. पानी के स्रोत, जैसे सिंक या नल, के बिल्कुल पास भारी विद्युत उपकरण नहीं रखने चाहिए. टूटे-फूटे या लंबे समय से खराब पड़े इलेक्ट्रॉनिक सामान को घर में जमा करके नहीं रखना चाहिए, क्योंकि इससे अव्यवस्था बढ़ती है और सुरक्षा संबंधी जोखिम भी हो सकते हैं.

टीवी की सही दिशा- टीवी को ड्राइंग रूम या लिविंग रूम के दक्षिण-पूर्व दिशा में रखना शुभ माना जाता है. यदि बेडरूम में टीवी रखा गया है, तो उपयोग के बाद उसे कपड़े से ढक देना बेहतर माना जाता है. इससे अनावश्यक प्रतिबिंब और ऊर्जा का प्रभाव कम होता है.

वॉशिंग मशीन और अन्य उपकरण-वॉशिंग मशीन को उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पूर्व दिशा में रखना उपयुक्त माना जाता है. कंप्यूटर, लैपटॉप और प्रिंटर जैसे उपकरण भी दक्षिण-पूर्व दिशा में बेहतर माने जाते हैं. इन उपकरणों के आसपास पर्याप्त वेंटिलेशन होना चाहिए ताकि गर्मी आसानी से बाहर निकल सके.

पूजा में भगवान को लगाएं शुभ भोग

सनातन परंपरा में पूजा के दौरान भगवान को भोग अर्पित करना श्रद्धा और समर्पण का प्रतीक माना जाता है. मान्यता है कि सच्चे मन से अर्पित किया गया भोग ईश्वर को प्रिय होता है. अलग-अलग देवी-देवताओं के लिए अलग भोग की परंपरा है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है कि भोग शुद्धता, सात्विकता और श्रद्धा के साथ तैयार किया जाए. हिंदू धर्म में पूजा-पाठ के दौरान भगवान को भोग लगाने की परंपरा सदियों से चली आ रही है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, पूजा तभी पूर्ण मानी जाती है जब भगवान को प्रसाद या भोग अर्पित किया जाए. भोग का अर्थ केवल भोजन चढ़ाना नहीं, बल्कि अपनी श्रद्धा, कृतज्ञता और समर्पण की भावना को भगवान के चरणों में अर्पित करना भी है. पूजा के समय सबसे सरल और सर्वमान्य भोग में फल, दूध, दही, मिश्री, गुड़, शहद और पंचामृत शामिल हैं. यदि घर में विशेष पूजा या व्रत का अवसर हो, तो खीर, हलवा, पंजीरी, लड्डू या मौसमी फल भी भगवान को अर्पित किए जा सकते हैं. भोग हमेशा ताजा, सात्विक और स्वच्छता के साथ तैयार किया जाना चाहिए.

राशिफल

दिनांक- 28 जून से 04 जुलाई 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य मिथुन राशि में, मंगल वृषभ राशि में, बुध कर्क राशि में ता. 30 को 12/30 दिन से वक्री, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कर्क राशि में, शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृश्चिक धनु मकर और कुम्भ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 4 को रोहिणीयां भौमे और सिंहे शुक्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, गुड, खाण्ड, रेशम, हींग, लालमिर्च, सरसों, तेल, तिल में तेजी आयेगी. हिमाचल, कश्मीर, उत्तराखण्ड, उत्तरप्रदेश, चंडीगढ़, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में अच्छी वर्षा से किसानों को लाभ होगा.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

सोमवार	29 जून को	स्नानदान व्रत पूर्णिमा, द. वट सावित्री व्रत,
शनिवार	03 जुलाई को	संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

मेष

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यों में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

वृषभ

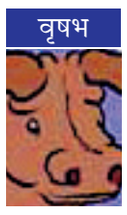

अकेले काम का बोझ उठा लेने से आपको नुकसान हो सकता है, अपने सहकर्मियों या अधिनस्थों के कारण कुछ परेशानी हो सकती है, नये कारोबार की शुरूआत ठीक रहेगी, पुरानी गलती को सुधारकर आगे बढ़ें, जीवन आसान हो जायेगा, कार्यक्षेत्र में आप मुश्किलों का डटकर सामना करेंगे, सप्ताह में आपको अपने प्रयासों में अच्छी सफलता मिलेगी.

मिथुन

अपने आसपास का माहौल खुशनुमा पायेंगे, मेहमानबाजी में आनन्द महसूस करेंगे, आफिस में आपके खुले विचारों को कोई पसंद नहीं करेगा, अतीत से वर्तमान के साथ सामंजस्य बैठाने की कोशिश करेंगे, शेयर में धन निवेश से परहेज करें, व्यवसाय में सावधानी बरतें, आपसी संबंधों में अनदेखी न करें, संतान की उन्नति होगी, गुमी वस्तु मिलने का योग है.

कर्क

परिस्थिति के अनुकूल विनम्रता अच्छी सफलता दिला सकती है, बहसबाजी और मुंह पर बोलने की आदत पर रोक लगायें, कार्य और व्यापार को सिर्फधन कमाने का साधन ही नहीं समझें, बल्कि प्रतिष्ठा का आधार भी मानें, सामाजिक जिम्मेदारी अच्छे से निभायेंगे,परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, कार्यक्षेत्र में प्रभावशाली सिद्ध होंगे. धार्मिक यात्रा की रूपरेखा बनेगी.

सिंह

कुछ अच्छे दोस्त बन सकते हैं, जो आगे आपकी मदद कर सकते हैं, घरेलू कार्यों को जिम्मेदारी से करें, टालमटोल की प्रवृत्ति का परिणाम हानिप्रद हो सकता है, घरेलू माहौल खुशनुमा रहेगा, सप्ताह के मध्य बढ़ते हुये खर्च सामने आयेंगे, व्यापार की कार्य योजना का विस्तार होगा, अधिक जल्दबाजी से निर्णय न करना हितकर रहेगा, सत्संग में रूचि बढ़ेगी.

कन्या

आपको अपनी अभिरूचियों व खुशियों पर ध्यान देने का अवसर मिलेगा, आप जो चाहते हैं, उसके अनुसार अपने कार्य बनाते चले जायेंगे, भाग्य भी आपकी मदद करेगा, हिम्मत और विश्वास में वृद्धि होगी, कैरियर में पहले से अच्छे प्रस्ताव मिलेंगे, आध्यात्मिक व धार्मिक कार्यों में आपकी रूचि बढ़ेगी, तरक्की की ऊँचाईयों पर पहुंचेंगे, लेकिन व्यक्तिगत संबंधों को भी पूरा महत्व देंगे.

तुला

जिद में आकर गलत फैसला लेने से बचें, उच्च अध्ययन में सफलता मिलेगी, जिस योजना को लेकर काफी समय से प्रयास कर रहे थे, उसे अंजाम तक पहुंचाने में सफलता का योग है. नौकरी में स्थान बदलने का मौका मिल सकता है, घूमने फिरने के बहाने रिश्तेदारी में जा सकते हैं, उन्नति की संभावना है, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी.

वृश्चिक

भाग्य अनुकूल बना रहने से मुश्किल कार्य भी आसानी से बनेगा, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिये आपने जितनी मेहनत की है, उसका लाभ मिलेगा, वैभव विलासिता पर खर्च होगा, जो लोग आपको नकारा समझते हैं, वे भी आपकी काबलियत की तारीफकरेंगे, सरकारी मामलों में कुछ विलंब हो सकता है, सौदे का मामला सुलझेगा.

धनु

अपनों के व्यवहार से खिन्नता होगी, घरेलू मामलों में विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा, सप्ताह के प्रारंभ में महत्व के कार्य करने की बजाय, रोजमर्रा की दिनचर्या ही निभाने का प्रयास करें, व्यवसाय में आप किसी अपरिचित पर अत्याधिक विश्वास न करें, स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा, आप बच्चों के लिये कुछ हद तक परेशान रह सकते हैं.

मकर

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.

कुम्भ

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

मीन

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. खुले मन मस्तिष्क से समस्या का हल निकालेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा.